Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2022 SHISRRJ | Volume 5 | Issue 5 | ISSN : 2581- 6306

ऋग्वेदीय पृथ्वीस्थानीय देवताओं में नदियों का विवेचन

सुरेखा जैसवार
शोधच्छात्रा, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश।

Article Info
Volume 5, Issue 5
Page Number : 90-93
Publication Issue :
September-October-2022
Article History
Accepted : 01 Sep 2022
Published : 10 Sep 2022

सारांश– इसमें ऋग्वेद में वर्णित पृथ्वीस्थानीय देवता के रूप में नदियों का विवेचन उपस्थित है इसमें आध्यात्मिक एवं भौतिक दोनों प्रकार की कामनाओं की पूर्ति में उनका महत्व प्रस्तुत है। ऋग्वेद के अनेक मंत्रों में उनकी स्तुतियाँ और आवाहन कर दोषों एवं पापों से मुक्ति का उल्लेख मिलता है। अतः ऋग्वेद में भौगोलिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक दृष्टि से इनका महत्व उपस्थित है।

मुख्य शब्द– सिन्धु, शुतुद्रि, गंगा, सरस्वती, गोमती, पितस्ता, परुषणी, कुलिशी।

नदियाँ इस राष्ट्र के प्राणदायिनी शक्तियाँ हैं। इस देश की जनता की वे सर्वस्व है। आर्य ऋषियों के आश्रम नदी तटों तथा नदी संगमों पर ही हुआ करते थे। क्योंकि आध्यात्मिक और भौतिक दोनों प्रकार की कामनाओं की पूर्ति के लिए उनका महत्त्व था, उनका इस दृष्टि से अपना अलग वैशिष्ट्य है कि उनके द्वारा वैदिक राष्ट्र की भौगोलिक परिस्थितियों का भी ज्ञान होता है। वेदों से लेकर परवर्ती समस्त भारतीय साहित्य में 'नदियों की श्रद्धा तथा पवित्रता का विस्तार से वर्णन किया गया है। उनको वैदिक शक्ति सम्पन्न कहा गया है।

तैत्तिरीय संहिता में सभी देवताओं को जलों में केन्द्रित बताया गया है।[प] इस प्रकार अथर्ववेद में जलों का इसलिए आवाहन किया गया हैं[पप] कि वे सुख देने वाले और पवित्रता प्रदान करने वाले हैं। इन वर्णनों को देखकर विदित होता है कि नदियों के साथ हमारे सजीव मानवीय सम्बन्ध रहे है उन्होंने अपनी दैवी शक्तियों के द्वारा मनुष्य का उद्धार एवं उपकार किया। यहाँ केवल उन्हीं नदियों का उल्लेख किया गया है, जिनके अस्तित्व के सम्बन्ध में विशेष रूप से ऋग्वेद और सामान्य रूप से यत्र–तत्र प्रमाण उपलब्ध हैं

1. **अंशुमती–**ऋग्वेद में इसका तीन बार उल्लेख है।[पपप] इसके तट पर शक्तिशाली कृष्ण नामक असुर रहता था। इन्द्र का यह घोर शत्रु थां बृहददेवता के अनुसार(6.1.10) यह कुरुक्षेत्र में और रामायण के अनुसार (2.5.506) (2.5.5.6) यमुना के निकट थी।

2. **अंजसी–** ऋग्वेद में इसका एक बार उल्लेख हुआ है।[पअ] इसके साथ ही कुलिश और वीर पत्नी नामक दो नदियों का भी उल्लेख किया है, इसके तट पर कुर्वम नामक असुर रहता है। यह नदी कहाँ थी, इसका कोई पता नहीं चलता।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

3. अनितभा–ऋग्वेद में इसका एक बार उल्लेख हुआ है।[अ] इसके साथ रसा, कुंभा, सरस्वती और सरयू का भी उल्लेख हुआ है। विद्वानों का अनुमान है कि यह सिन्धु की कोई पश्चिमी सहायक नदी थी।

4. असिक्नी– (चिनाव) ऋग्वेद में इसका दो बार उल्लेख हुआ है।[अप] गंगा, यमुना, सरस्वती और शुतुद्री के साथ इसका नाम आया है। 'निरुक्त' (9.26) के अनुसार काले रंग के पानी के कारण इसका ऐसा नाम पड़ा। आगे चलकर इसको चन्द्रभागा या चिनाव कहा गया। इसके तट पर रोगनाशक अनेक जड़ी–बूटियाँ होती थी। भागवत में भी इसका उल्लेख हुआ है।[अपप] यूनानियों ने इसे 'असोक्निज' कहा है। पंजाब की पाँच नदियों में से एक नदी है।

5. आपया– ऋग्वेद में इसका सिन्धु और दृषद्वती के साथ नामोल्लेख हुआ है।[अपपप] महाभारत (3.63. 68) में इसे कुरुक्षेत्र की नदी बताया गया है कुछ विद्वानों के मत से अस्थिपुर महेश्वरदेव के पास बहने वाली यह एक बरसाती नदी है कुछ विद्वानों ने इसको ओधवती कहा है।

6. आर्जीकाया– ऋग्वेद में इसका अन्य अनेक नदियों के साथ दो बार उल्लेख हुआ है।[पग] यास्क निरुक्त (8.26) के मत से इसका उद्गम स्थल ऋजीक पर्वत था और ऋजुगामी होने के कारण इसका नामकरण हुआ। यास्क ने इसे विपाश् व्यास कहा है।

7. कुंभा (काबुल नदी)–

ऋग्वेद में इसका अन्य अनेक नदियों के साथ दो बार उल्लेख हुआ है।[ग] यह सिन्धु नदी की सहायक नदी हिन्दुकुश के दक्षिण में है। यूनानी इसे ''कोफेन' नाम से कहते हैं।

8. **कुलिशी**– ऋग्वेद में इसका अंजसी और वीरपत्नी नदियों के साथ उल्लेख हुआ है। इसे वाहीक प्रदेश की नदी बताया जाता है।

9. क्रमु–ऋग्वेद में इसका दो बार उल्लेख हुआ है।[गप] इसे आजकल कुर्रम नाम से कहा जाता है, जो इसारवेल के निकट सिन्धु के पश्चिम तट में मिल जाती है।

10. गंगा– ऋग्वेद में गंगा का तीन बार उल्लेख हुआ है। ऋग्वेद के नदीसूक्त (10.75.5–6) में नदियों में सर्वप्रथम गंगा नदी का वर्णन है, जिससे उसकी श्रेष्ठता सिद्ध होती है, उसकी पवित्रता और महानता का उल्लेख वेदों से लेकर पुराणों रामायण, महाभारत और परवर्ती अनेक विषय के ग्रन्थों में सर्वत्र व्याप्त है।

महाभारत आदिपर्व (164.22) तथा केदार खण्ड (38.140) के अनुसार देवलोक की देवनदी अलकनन्दा का नाम ही गंगा है वह सुमेरु (सतोपन्थ) से निकलती है। देवप्रयाग क्षेत्र में भागीरथी की अलकनन्दा में सन्धि होती और तदुपरान्त दोनों की सम्मिलित धारा गंगा के नाम से कही जाती है। गंगा को त्रिपथगा कहा जाता है अर्थात् द्युलोक अन्तरिक्ष लोक और भूलोक तीनों में उसके असित्व एवं महत्त्व की महिमा को स्वीकार किया गया है।

गोमती– ऋग्वेद में अन्य अनेक नदियों के साथ गोमती का उल्लेख हुआ है। ऋग्वेद (10.64.9) में वेगवती नदियों में केवल सरयू सिन्धु और गोमती का उल्लेख हुआ है। उन्हें यज्ञ के रक्षार्थ आमंत्रित किया गया है।

परुष्णी– (रावी) ऋग्वेद में पाँच बार इसका उल्ल्ख हुआ है।[गपप] इसे इरावती भी कहा गया है। इसी के तट पर प्रसिद्ध दाशराज्ञ युद्ध हुआ था। राजा सुदास ने अपने शत्रु कुत्स को पराजित कर इसके तट को

पवित्र किया था। ब्रह्मपुराण (144/1/23) में भी इसका उल्लेख हुआ है। निरुक्त (9/26) में इरावती का ही अपर नाम परुष्ण बताया गया है यही वैदिक परूषणी वर्तमान में रावी के नाम से प्रसिद्ध है।

पितस्ता– (झेलम) ऋग्वेद में एक बार अनेक नदियों के साथ इसका उल्लेख हुआ है।[गपपप] कश्मीर में आज भी इसे वेथ के नाम से जाना जाता है।

सिन्धु– प्राचीन भारतीय विशाल एवं पवित्र नदियों में सिन्धु का महत्त्वपूर्ण स्थान है। अतः प्राचीन वैदिक साहित्य के अनेक स्थलों[गपअ] के अतिरिक्त परवर्ती प्रमुख लौकिक संस्कृत ग्रन्थों में भी इनका उल्लेख हुआ है। इस नदी के तट पर मलमल का महीन कपड़ा प्राचीन काल में निर्मित होकर बेबिलोनिया एवं असीरिया तक जाता था।

शुतुद्रि–विपाश के साथ शुतुद्रि का समुल्लेख ऋग्वेद[गअ] के अतिरिक्त परवर्ती संस्कृत ग्रन्थों में भी हुआ है। ऋग्वेद में स्पष्ट रूप से विपाश (व्यास) और शुतुद्रि का पर्वत से निकलकर समुद्र की ओर जाने का वर्णन हुआ। जो सिन्धु की विशाल सहायक नदियों में सबसे पूर्वी है।

सरस्वती– ऋग्वेद में सरस्वती के सम्बन्ध में अनेक ऋचायें [गअप] उपलब्ध होती है, जिससे उस समय का इसका महत्त्व स्वतः ही व्यक्त होता है। आधुनिक काल में जो महत्त्व गंगा को प्राप्त होता है, वैदिक काल में वही महत्व सरस्वती को प्राप्त था। ऋग्वेद के कतिपय सन्दर्भों से यह प्रतीत होता है कि यह सात धाराओं अथवा सहायक नदियों के साथ प्रवाहित होकर समुद्र में गिरती थी, ऋग्वेद के अतिरिक्त सरस्वती अन्य परवर्ती वैदिक साहित्य में भी उल्लिखित है अतएव ऋग्वेद के विविध संदर्भों में व्यक्त स्वरूप एवं भौगोलिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक महत्त्व को दृष्टि में रखते हुये सिन्धुः वितस्ता; असिक्नी, परुष्णी, विपाश, शुतुद्रि तथा सरस्वती इनके महत्त्व के सम्बन्ध में अनेक ऋचायें सुन्दर वर्णन प्रस्तुत करती हैं। इनमें से कतिपय नदियों को तो ऋषियों पूर्ण अथवा कई सूक्तों में अंशतः गौरवमय स्थान दिया है। महत्त्वपूर्ण ऐसी नदियों में पश्चिम की प्रमुख सिन्धु तथा पूर्व की प्रमुख नदी सरस्वती का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जिन्हें नदियों में श्रेष्ठ होने के कारण मातृकल्पा देवी माना गया है।

सन्दर्भ

---

i आपो वै सर्वा देवताः (2.6.8.3)
ii अथर्व0 1.33.1
iii ऋग्वेद (8.95.13) 14, 15
iv ऋग्वेद 1.04.4
v ऋग्वेद 5.52.6
vi ऋग्वेद 8.20.25
vii भागवत 5.14.18
viii ऋग्वेद 3.23.4
ix ऋग्वेद 8.53.11, 10.75.5
x ऋग्वेद 5.53.9, 10.75.6
xi ऋग्वेद 5.53.9, 14.75.6
xii ऋ0 5/52/9, 7/88/8

[xiii] ऋ0 10/75/5

[xiv] ऋ0 1/126/1

[xv] वैदिक स्थलों के प्रवाहशील प्राकृतिक रूप पेज–125

[xvi] ऋ0 2/41/16